9

''देना धन्य है''

आरम्भिक कलीसिया लोगों की एक अद्‌भुत देह थी। उन्होंने कुछ ऐसा किया जो आज के लोगों को करना बहुत कठिन लगेगा। यानी कुछ इतना हटकर कि हम इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दो बार पाते हैं।

> और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेच कर जैसी किसी की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे (प्रेरितों 2:44, 45)।

> और उन में कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उन को बेच बेच कर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे। और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे।
>
> और यूसुफ नाम, क्रुप्रुस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बरनबास अर्थात् शान्ति का पुत्र रखा था। उस की कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपए लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए (प्रेरितों 4:34-37)।

पहली सदी के मसीही लोगों में उदारता से दिए गए ये दान एकाध बार की बात नहीं थी। यहूदिया के आगे कलीसिया के फैलने से, उत्तर में लगभग तीन सौ मील (480 किलोमीटर) अंताकिया के सीरिया में एक कलीसिया स्थापित हुई। अगबुस नाम का एक नबी यरूशलेम से अंताकिया में आकर यह बताने लगा कि एक बहुत बड़ा अकाल आने वाला है। कलौदियुस कैसर के शासनकाल में एक विश्वव्यापी अकाल पड़ा (प्रेरितों 11:27, 28)। यहूदिया की तरह अतांकिया भी इसके प्रभाव से अछूता न रहा; परन्तु अतांकिया के मसीही लोगों ने ''ठहराया, कि हर एक अपनी-अपनी पूंजी के अनुसार यहूदियों में रहने वाले भाइयों की सेवा के लिए कुछ भेजे। और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया'' (प्रेरितों 11:29, 30)।

कुछ साल बाद पौलुस ने मकदुनिया, अखाया और गलातिया के अन्यजाति मसीहियों को पलिश्तीन के यहूदी मसीहियों की आवश्यकताओं के लिए योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। उसमें उन्हें सप्ताह के पहले दिन चंदा अलग रखने के लिए कहा ताकि उसके वहां पहुंचने पर चंदा उगाहने की आवश्यकता न पड़े (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)।

आराधना के रुप में चंदा देना

परमेश्वर की आराधना की एक अभिव्यक्ति के रूप में साप्ताहिक चंदे की बात का बाइबल

में से कोई आधार है ? पौलुस ने कुरिन्थिुस के मसीही लोगों को सप्ताह के पहले दिन चंदा लेने के लिए कहा जब वे आराधना के लिए इकट्ठा होते थे। क्या वह चंदा लेने का सबसे सुविधाजनक समय बता रहा था ? क्या यह चंदा उनकी आराधना का भाग माना जाता था या परमेश्वर की उनकी आराधना से इसका कोई सम्बन्ध नहीं था ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए एंडी टी. रिची ने लिखा है:

> कोई संदेह नहीं कि हम में से कइयों ने उस शिक्षा को सुना है, जिसमें हमें बताया गया था कि आराधना की कई ''चीज़ें'' थीं, जिनमें से एक ''रख छोड़ना'' भी थी। इसलिए हम मशीनी किस्म के निष्कर्ष पर पहुंचे कि चंदा देना उस सूची में है, परन्तु हमने इसके अलावा कि कलीसिया के पास अपना काम करने के लिए धन होना आवश्यक है, इसलिए इसकी सहायता करना हमारी ज़िम्मेदारी है, और व्याख्या नहीं की। ...

बाद में उसने पूछा:

> क्या हमें अपनी अवधारणाओं को तीखी करके उन्हें सीधी नहीं करना चाहिए ताकि हमारे लिए चंदा देना परमेश्वर के सम्मान और आराधना का विवेकपूर्ण कार्य हो ?[1]

बाइबल में से इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए आइए मसीहियत की इब्रानी जड़ों अर्थात उस पृष्ठभूमि पर विचार करते हैं, जिसमें से पौलुस आया। परमेश्वर को देना बाइबल में वर्णित दूसरा सक्रिय उत्तर है (उत्पत्ति 4:3-5)। पहला आज्ञाकारिता था (उत्पत्ति 2:16, 17)। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को भलाई और बुराई के ज्ञान के पेड़ का फल न खाने की आज्ञा दी थी। बलिदानों से जुड़ा परमेश्वर का निर्देश उत्पत्ति की पुस्तक में नहीं मिलता, परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''विश्वास ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया; ...'' (इब्रानियों 11:4)। विश्वास के द्वारा कुछ भी करने से पहले परमेश्वर की ओर से निर्देश होना आवश्यक है; क्योंकि ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से आता है'' (रोमियों 10:17)।

परमेश्वर के लोग हमेशा देने वाले लोग रहे हैं और परमेश्वर ने हमेशा चाहा है कि देना उसे एक उत्तर हो। अब्राम ने मलकीसिदिक, शालेम के राजा और परमेश्वर के याजक को लूट का दसवां भाग दिया था (उत्पत्ति 14; विशेषकर 18 से 20 आयतें देखें)। याकूब ने परमेश्वर को अपनी सभी आशिषों का दसवां भाग देने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 28:20-22)।

अलग-अलग प्रकार के बलिदान और भेंटें व्यवस्था के अधीन परमेश्वर की आराधना का भाग थे, जिसके लिए दो वेदियां थीं। तम्बू (और बाद में मन्दिर) के बाहर की वेदी मेल बलियां लेने के लिए थीं। अन्दर की वेदी परमेश्वर को भेंट की जाने वाली धूप के लिए थी। ये वेदियां परमेश्वर को भेंट देने के लिए थीं। लैव्यव्यवस्था के पहले सात अध्याय परमेश्वर को दिए जाने वाले अलग-अलग दानों और बलिदानों के सही चढ़ाने के निर्देश देते हैं।

जब एज्रा और नहेम्याह ने यहूदा में सच्ची आराधना को बहाल किया तो वाचा के बहाल होने की चीज़ों में से परमेश्वर के घर की सेवाओं के लिए हर साल एक शेकेल का तीसरा भाग देने पर

सहमति हुई थी। लोगों को अन्नबलियां, होमबलियां और पाप बलियां करते रहना था; और उन्हें भूमि तथा हर पेड़ के पहले फल के साथ पहिलौठे को भी हर साल परमेश्वर के घर में लाना था। वे लेवियों के लिए भी अपने दशमांश लाने को सहमत हो गए, जिन्होंने बदले में परमेश्वर के भण्डार में दशमांश में से अपना दशमांश देने पर सहमति जताई, जिससे परमेश्वर का घर नज़रअंदाज़ न हो (नहेम्याह 10:32-39)।

पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक ने यहूदा के लोगों को परमेश्वर के साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरा न कर पाने को लेकर डांट लगाई थी। मलाकी के द्वारा परमेश्वर ने पूछा, ''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंटों में।'' नबी ने यहूदा के लोगों को बताया कि परमेश्वर को लूटने के लिए पूरी कौम को शाप दिया गया था। फिर उसने उन्हें आदेश दिया, ''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; ...'' (मलाकी 3:8-10)।

यीशु ने अपने चेलों को स्वर्ग में धन जमा करने के लिए कहा (मत्ती 6:19-21)। उसने उन्हें देने का सही उद्देश्य तथा ढंग सिखाया (मत्ती 6:1-4)। उनका दान लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं बल्कि निर्धनों की सहायता के लिए होना था। उन्हें गुप्त में दान करने के लिए कहा गया, जिससे परमेश्वर उन्हें आशीष दे, जो इस बात का संकेत था कि उनके दान परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए होने चाहिए न कि मनुष्यों को रिझाने के लिए। मन्दिर के भण्डार में लोगों को धन डालते हुए देखने पर यीशु ने पाया कि कुछ लोग बहुत अधिक दान डाल रहे थे। एक निर्धन विधवा ने तांबे के केवल दो सिक्के डाले। यीशु ने यह कहते हुए अपने चेलों का ध्यान इस ओर दिलाया, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है'' (मरकुस 12:43, 44)।

इसी पृष्ठ भूमि के आधार पर आरम्भिक मसीही लोगों ने परमेश्वर को देना सीखा था। यह चंदा देने की बात सिखाने के लिए पौलुस की बात का भी आधार है। उसने यीशु की एक बात का हवाला दिया, जो सुसमाचार के चारों वृत्तांतों में कहीं नहीं मिलता: ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35ख)। कलीसिया में चंदा देने की बात करना बजट बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि कलीसिया के सुधार के लिए है।

ईश्वरीय शिक्षा के अनुसार देना

देने के पौलुस के उदाहरण से संकेत मिलता है कि वह इसे आराधना की एक अभिव्यक्ति के रूप में मानता था। वास्तव में उसने नये नियम में चंदे पर मिलने वाला सबसे सम्पूर्ण निर्देश दिया। यहूदिया के निर्धनों के लिए चंदा इकट्टा करने के कुरिन्थुस के मसीही लोगों को उसके निर्देश की हम पहले ही बात कर चुके हैं; उसने उन्हें बताया कि सप्ताह के पहले दिन आराधना के लिए इकट्ठे होने पर हर कोई ''कुछ अपने पास रख छोड़ा करे'' (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। शायद उसने उन्हें उस दिन चंदा रखने के लिए इसलिए कहा, क्योंकि यही वह दिन था जब वे इकट्ठे हुआ करते थे; परन्तु चंदा देने की पौलुस की समझ दिमाग में आ जाने पर हमें कोई शक नहीं होगा कि वह इसे परमेश्वर को आराधना पूर्वक चंदा देना सिखाना चाहता था।

पौलुस मकदुनिया, अखाया और गलातिया की यूनानी कलीसियाओं से फलस्तीन की यहूदी कलीसियाओं के लिए दो कारणों से चंदा लेना चाहता था। एक कारण तो यहूदिया के निर्धन मसीही लोगों की सहायता करना था जबकि दूसरा कारण यहूदी और अन्यजाति मसीही लोगों में आपसी सम्बन्ध को मज़बूत करना था। ये दोनों कारण परमेश्वर के काम तथा परमेश्वर को उत्तर के रूप में उसकी महिमा के रूप में थे। 2 कुरिन्थियों 8 और 9 में कुरिन्थुस की कलीसिया के लिए निर्देशों से चंदा देने की पौलुस की अवधारणा का पता चलता है।

पौलुस ने पहले यह बताया कि मसीही चंदा क्या *नहीं* होना चाहिए। यह दूसरों के कष्ट को कम करके देने वालों की परेशानी बढ़ाने के लिए नहीं होना चाहिए (8:13)। मसीही व्यक्ति को चंदा कुड़कुड़ाते हुए नहीं देना चाहिए (9:7)। यानी मसीही व्यक्ति देने के बाद यह न कहे कि उसे नहीं देना चाहिए था। अन्ततः मसीही व्यक्ति पर चंदा देने की मजबूरी नहीं है (9:7)। इसका अर्थ यह है कि हम चंदा केवल इसलिए न दें कि कि लोग दे रहे हैं या न देने पर लोग हमारे बारे में क्या कहेंगे; बल्कि हमारा चंदा परमेश्वर को मन का स्वतन्त्र उत्तर होना चाहिए।

चंदा क्या *हो* इस पर पौलुस की एक लम्बी सूची है:

1. मसीही चंदा, देने वालों के ''भारी कंगालपन'' में भी उनके ''बड़े आनन्द'' को दिखाता होना चाहिए (2 कुरिन्थियों 8:1, 2)। आनन्द परमेश्वर की आराधना की उन अभिव्यक्तियों में से एक है, जिनका अध्ययन हमने पिछले पाठ में किया था।

2. मसीही चंदा देने वालों की बड़ी निर्धनता में भी उदारता से होना चाहिए (8:1, 2)। इस प्रकार की उदारता केवल परमेश्वर की बड़ी आशिषों के प्रत्युत्तर से प्रेरित होने पर ही हो सकती है। परमेश्वर के प्रति उदारता दिखाना ही तो आराधना है।

3. मसीही लोगों से उनकी क्षमता से बढ़कर देने की उम्मीद नहीं की जाती, परन्तु मकदूनिया के कुछ मसीही लोग परमेश्वर के लिए इस सेवकाई के उत्तर में अपनी क्षमता से कहीं बढ़कर दे रहे थे (8:3, 12)। ऐसा चंदा बलिदानपूर्वक की गई आराधना है।

4. मकदूनिया के मसीही लोगों ने अन्य मसीही लोगों की सहायता के लिए योगदान देने का अवसर मांगा (8:4)। यह अन्य पवित्र लोगों के बीच में परमेश्वर के कार्य के प्रति आराधना-पूर्वक प्रेम और धन्यवाद दिखाना था।

5. इन उदार मसीही लोगों ने अपने मन पहले परमेश्वर को सौंप दिए (8:5)। अभिप्राय यह है कि व्यक्ति जब तक स्वयं को परमेश्वर को नहीं देता तब तक वह उसे अधिक नहीं दे सकता। देने वाले मन के बिना दिया गया दान बेकार और व्यर्थ है। रोमियों 12:1, 2 में अपने आपको परमेश्वर को देने को आराधना के रूप में दिखाया गया है।

6. परमेश्वर को देना अनुग्रहकारी काम है (8:6), जिसमें हमें बढ़ते रहना चाहिए (8:7)।

7. देना परमेश्वर तथा एक-दूसरे के लिए हमारे प्रेम की गम्भीरता को साबित करता है (8:8)। दान केवल इसलिए नहीं दिया जाना चाहिए कि कलीसिया को इसकी आवश्यकता है। चंदा परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम को दिखाने का एक माध्यम होना चाहिए। यह आराधना है!

8. देने में यीशु का उदाहरण बेहतरीन है, ''वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ'' (8:9)। जब हम समझ जाते हैं कि आत्मिक रूप में हम कितने धनवान हैं, जिसमें हम उस सबके वारिस हैं, जो पिता का है, तो उस धन की

बहुतायत में से देना आराधना बन जाता है।

9. देने से साथी मसीहियों में समानता मिलती है (8:13, 14)। समानता से सहभागिता, योगदान, साझीदारी, और इकट्ठे होने का सुझाव मिलता है, जो सब मिलाकर सामूहिक आराधना की विशेषताएं हैं।

10. देना परमेश्वर के काम में योगदान देने को तैयार होने का संकेत है (8:11, 12; 9:2)।

11. देना दिल की बात है। परमेश्वर ऐसे देने वालों को चाहता है, जो खुशी से दें और सोच-समझकर देने की योजना बनाएं (9:7)। खुशी से, सोच-समझकर देने वाले दिल से जो परमेश्वर के लिए प्रेम से ओत-प्रोत है, आराधना है।

12. देने वाले को उसकी ओर से आशीष मिलती है, जो सब दानों का देने वाला है और जो बोने के लिए बीज उपलब्ध कराता है (9:10, 11)। पूरी आराधना में आराधक को उसकी ओर से आशीष मिलती है, जिसकी आराधना की जाती है, इसीलिए ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)।

13. देने से देने वाले और पाने वाले दोनों के मन में परमेश्वर का धन्यवाद उत्पन्न होता है (9:11-15)। किसी भी रूप में परमेश्वर का धन्यवाद करना आराधना है।

सारांश

परमेश्वर की योजना के अनुसार देना सच्ची आराधना की इतनी बातों को पूरा करता है कि चाहने पर भी इन दोनों को अलग करना कठिन हो जाता है। जिम्मी जिविडन ने सुझाव दिया है, ''देने पर सिखाने के समय उन तथ्यों पर अधिक ध्यान दें कि यह आराधना है और इसमें बजट पूरा करने के लिए आवश्यक डॉलरों और सेंटों के बजाय परमेश्वर के सामने दीनता से झुकना आवश्यक है।''[2]

बहुत सी कलीसियाएं देने के बारे में सिखाने के प्रति बहुत संवेदनशील हो गई हैं। कलीसिया के विकास के अध्ययनों से पता चलता है कि कलीसियाओं के विरुद्ध ''कलीसिया के बाहर'' के लोगों की सबसे बड़ी आलोचना धन के लिए उनका आकर्षण है।[3] कई कलीसियाओं ने यह घोषणा करके उत्तर दिया है कि कलीसिया की सेवकाइयों में बाहरी लोगों के योगदान की उम्मीद नहीं की जाती। ऐसे भी हैं, जिन्होंने आराधना के दौरान चंदा लेना बंद कर दिया है, परन्तु अपने सदस्यों से डाक या किसी और माध्यम के द्वारा चंदा देने को कहते हैं। कई लोग अपनी सभाओं में चंदा देने पर प्रचार किए जाने या सिखाने की अनुमति नहीं देंगे। एक से अधिक अवसरों पर मेहमान वक्ता के रूप में बुलाए जाने पर मुझे चंदे पर बोलने या शिक्षा न देने के लिए कहा गया। अधिक देर की बात नहीं है, मुझे रविवार की सुबह एक मण्डली में वचन सुनाने के लिए कहा गया। बाद में मुझसे फोन पर कहा गया कि मैं रविवार प्रात: की बाइबल क्लास भी लूं। मैंने हां कर दी पर उनसे पूछने लगा कि वे क्या अध्ययन कर रहे हैं और यदि वे किसी विशेष बात को सिखाना चाहते हैं तो मैं वह सिखा सकता हूं। मेरे बोलने पर उनकी केवल एक बात में प्राथमिकता थी कि मैं उस विषय पर बात न करूं यानी मैं चंदे को छोड़कर बाकी सब विषयों पर बोल सकता था।

जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा है, हम ''कलीसिया के बाहर'' के लोगों से यह समझने या उसकी सराहना करने की उम्मीद नहीं कर सकते जो आराधना में मसाही लोग करते हैं या उन्हें

करना चाहिए। हमें उनकी भावनाओं की कद्र करनी चाहिए। दूसरी ओर चंदा देने को परमेश्वर को आराधनापूर्वक उत्तर को न समझ पाने का अर्थ आराधना के पूरे अर्थ को न समझ पाना है। हमें हर हाल में ''कलीसिया के बाहर'' के समाज को सार्वजनिक सभा में अपने स्तुति और परमेश्वर के उत्तर का धन्यवाद हमारी स्तुति के इस भाग को छोड़ने के लिए धमकाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

टिप्पणियां

[1]एंडी टी. रिची जूनि., *दाऊ शैलर वरशिप द लॉर्ड दाई गॉड* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1969), 91. [2]जिम्मी जिविडन, *मोर दैन ए फीलिंग; वरशिप दैट प्लीटज़स गॉड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1999), 119. [3]रिक वारेन, ''कन्टेंपरेरी अप्रोचस टू मिनिस्टरी, इवेंजेलिज़्म एंड ऑर्गेनाइजेशन: रीचिंग द बेबी बूम जनरेशन,'' मैट्रोपोलिटिन मिशन्स *ऑकेज़नल पेपर* 14 (दिसंबर 1989): 5.